बचन शहनशाह कर गये जो करम

उसी राह पर है तेरा हर कदम

नफरतो ने था हर दिल को तोडा

शहनशाह और जगतमां ने जोडा

हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई मिल गये सारे एकदम

जकडी बधंन मे थी ये कुल खुदाई

मुक्ति दाता ने मुक्ति दिलाई

लोग जागे आये आगे मिटे जब उनके भम्र

याद फिर ऐसे संतो की आई

तोड अपनी जिन्होने निभाई

वो कर गये वो तर गये सफर हुआ है खत्म

आये दर पे जो इस मेहरबा के

तुटे बधंन हर इक आत्मा के

बाबू ओमी मिली मुक्ति ना हाथ पकडेगा यम

तर्ज ः सुहाना सफर और ये मौसम हसीन